Scanned with CamScanner

ओंछें वार ककइ सें

लोक साहित्य में फागें

ओंछें बार ककइ सें

बुन्देली चौकड़ियाँ

रचयिता
राज गोस्वामी (डॉ.)

Foreword by :-
Prof.D.P.Singh
Vice Chancellor
Dr.Harisingh Gour University
Sagar-470003 (M.P.)

Scanned with CamScanner

ओंछें बार ककइ सें : डॉ. राज गोस्वामी

स्वत्वाधिकार : रचयिता

प्रथम संस्करण : 01 जनवरी 2008

कवर मेकअप : दिलशेर 'दिल'

मूल्य : 200/- रूपये

प्रकाशक : मध्यप्रदेश लेखक संघ,
शाखा दतिया (म.प्र.)

लेजर टाईपिंग : आर.के. कम्प्यूटर एवं ग्राफिक्स
ग्राम-डगरई डेरा, खुशीपुरा
रावतपुरा कालेज के पास,
दतिया (म.प्र.)
मोबा.-9893502233

मुद्रक : भानू ऑफसेट प्रिन्टर्स
मुड़ियन का कुआं,दतिया
फोन 233206

Scanned with CamScanner

ओंछें बार : इतै

क्र.	क्षणिका	पृ.क्र.
1.	तेरौ वारौ छैया	1
2.	औंछें बार ककइ सें	1
3.	फूले नई समा रए	2
4.	जइ सें जानें झांसी	2
5.	मिली न एकउ पंजी	3
6.	घूंघट भीतर ढ़ाकें	3
7.	पूरी फसल सुकानी	4
8.	नेंकउ साथ न जानें	4
9.	नहीं नौकरी पानें	5
10.	बैठीं बार सुकारइ	5
11.	जामें कछू ना हानी	6
12.	सुध ना लेत हमारी	6
13.	हम हैं बड़े सियाने	7
14.	बृज में खूबइ ऊलें	7
15.	परीं पीठ पै लातें	8
16.	मिलवे कों गिरघर सें	8
17.	फटफटिया पै फिर रइ	9
18.	कैसें होय गुजारौ	9
19.	अघबूढ़े भये भाई	10
20.	की की याद सता रइ	10
21	नइयां कोउ करीबी	11
22.	बड़े सियाने बन रए	11
23.	अपने पुरा की बिन्ना	12
24.	लंबे तिलक महंती	12
25.	बड़ी भीड़ में फस कें	13
26.	लाज राखनें घर की	13
27.	बेइ देवता भाई	14
28.	ताल ठोक कें रैनें	14
29.	कां लग रइ कस्तूरी	15
30.	मौ में आ गव पानी	15
31	अपने घर में रानें	16
32.	की खों घरें बुलाऐं	16
33.	दूर दूर खों भग रइ	17
34.	जौन उपाधी पानें	17
35.	रोटी खाऐं कैसें	18
36.	जानें का का कै गए	18
37.	उनकौ पेट पिरातइ	19
38.	दुकगव घर में परकें	19
39.	बात बनत है बातन	20
40.	पचफैरा खों टांगें	20
41	लै नइ पा रए कंगी	21
42.	हतौ न जिनकें गड्डुआ	21
43.	आँखन किनके बसगइ	22
44.	खिल रइ बृज में होरी	22
45.	देखे दिन ना तारे	23
46.	घबराई सब गोरी	23
47.	अपने घर खों भर रए	24
48.	घर भर खों समझा रए	24
49.	लगत उनइ खों मर रए	25
50.	ऐसो बोलो किन कौ	25
51.	रैनें उनसें हटकें	26
52.	पीकें धुंआ गटक रए	26
53.	भृंगी लेत बलईया	27
54.	कमउ छुटक कें डारें	27
55.	हम खों देख चिता रइ	28
56.	अपनौ आपौ खों रए	28
57.	अच्छे घर में ब्याने	29
58.	का हो गव भौजाई	29
59	काये लगाऐं औढ़ीं	30
60.	पी कें दूध कचुल्ला	30
61.	धीरें धीरें जा रइ	31
62.	सुध कान्हा की लै कें	31

Scanned with CamScanner

ओंछें बार : इतै

क्र.	क्षणिका	पृ.क्र.
63.	दुनियाँ भर सें न्यारे	32
64.	अपने हाथन मर रए	32
65.	हो गई सब सें बातें	33
66.	पारौ ढ़कौ उघारो	33
67.	कैसें तुमें बताऐं	34
68.	बूंदें छम छम छमकें	34
69.	बढ़े भाग जस दै रए	35
70	उनें देख हम जर रए	35
71.	बात समझ ना आई	36
72.	हुरया रई अवइ सें	36
73.	फूलत फिर रइ फूला	37
74.	गये ते जइ सावन में	37
75.	लजा लजा कें रै गइ	38
76.	तउ तौ सबै बता रइ	38
77.	को है जाए संयो गव	39
78.	दिखै चैन में चोला	39
79.	कौ सें कैं दें हेरो	40
80.	नई रूई सी पौनी	40
81.	लगी अंट कौ पौआ	41
82.	सब कौ बातें सै रइ	41
83.	संग लगे छैलन के	42
84.	आये फूला भुन कें	42
85.	हो गई चांई माई	43
86.	कंगना चूड़ी खनकें	43
87.	नैक कितउ ना तिरकें	44
88.	कितनउ अच्छै करतन	44
89.	मिलन लगीं चोरी सें	45
90.	जब तक राम गुसइयाँ	45
91.	मन हो रऔ बहुरंगो	46
92.	हमें खबा रइ जबाइ	46
93.	उनके लानें मर रइ	47
94.	आसमान में उड़ रए	47
95.	फुनफुनात फुंडन में	48
96.	खा रइ खूब कचौड़ी	48
97.	मचलन लगी जवानी	49
98.	जो कैनें सो कन्नें	49
99.	फटफट पर रइ जवानी	50
100.	बेजौं दारू खोरा	50
101.	तौउ हम हरया रए	51
102.	बातन के रसखोरा	51
103.	पइसा पै ना मरियो	52
104.	कूकर जैसे लर रए	52
105.	भाग सराहो बा के	53
106.	छपकन कौ बहुरंगो	53
107.	सुनी कृष्ण पै बाधा	54
108.	पैरें फटो पजामा	54
109.	हो हो पर रइ दूनर	55
110.	खुजवा रइ करोरी	55
111.	सखियन सें कर चोरी	56
112.	फिर ऐनइ तुम खिलियो	56
113.	अपने घर खों भर रए	57
114.	तन मन हमरे खोले	57
115.	संग लगे कइ लुक्का	58
116.	गोटी तौउ न मानें	58
117.	बिना बात के तुसनें	59
118.	श्याम पकर झक झोरें	59
119.	सिर खों श्याम दबाने	60
120.	कर कें उनसें वादा	60
121.	थक रइ नैक न कंधन	61
122.	निकरे ऐनइ सियाने	61
123.	खुदइ जलानें बाती	62
124.	जौ तौ जोजइ जानें	62
125.	आ गइ विपदा भारी	63
126.	नजरन काजर पारें	63
127.	हमने ऐन सलोरे	64
128.	सूरत पर गइ कारी	64
129.	गोरे भये ना कृष्णा	65
130.	पियत मूत सौ पानी	65
131.	देतीं हमें खरोंचा	66
132.	मन नइ रखत घिनोनो	66
133.	ददरौआ के धामा	67
134.	हनूमान की बातें	67
135.	खाऐं मगौड़ी तलवा	68
136.	काल चले ज्यौं मर कें	68
137.	राज उनइ से बोदे	69
138.	कत पीताम्बरा नगरी	69
139.	का है राम हुबौआ	70
140.	सिंह सबारी बारी	70
141.	जेइ लगत बलवाना	71
142.	जौ मातन कौ मेला	71
143.	जिननें लंका जारी	72
144.	जो दव उनखों दै दें	72
145.	आबौ जाबौ टोरो	73
146.	आ गइ आज दिवारी	73
147.	है दूजे में फाईल	74
148.	हैगो ऐनइ दूरी	74
149.	जानें का का लेखौ	75
150.	बदौ मुबाइल जैसें	75
151.	रस आँखन बरसा गव	76
152.	हैं राधा सी प्यारी	76
153.	हैं प्रानन सें प्यारी	77
154.	नैयां ढ़ोले ढ़ाले	77
155.	वे तो है दिलवाले	78
156.	डर नइ कौनउ भारी	78
157.	नर होवै या नारी	79
158.	जैसें आँखन सुरमा	79
159.	दूजिन की गिन जानत	80
160.	रै गए होंइ रैकें	80
161.	बज गव उनकौ बाजा	81
162.	रैनें नैयां रीनें	81
163.	बांद मुड़ी पै सेला	82
164.	मन में प्रभू हमारे	82
165.	आनन प्रिये तुमारो	83
166.	किते बताओ खो गए	83
167.	कए ते आए सकारें	84
168.	गुमसुम गुमसुम रत वे	84
169.	मन बछड़ा सौ लग रव	85
170.	खेलत ऐसी लीला	85
171.	अमरूदन के गतरे	86
172.	लग रए गिरहा केतू	86
173.	चौनत कोऊ नइयाँ	87
174.	का मन में पछतावौ	87
175.	जे को आ गए ससरे	88
176.	दाव लगे प्रानन के	88
177.	मन खों रखनें चंगा	89
178.	सब की बातें चखनें	89
179.	सब के भाग विधाता	90
180.	लग रव खूब सलोनो	90
181.	जां कै दो तां मिल रइ	91
182.	होतइ भजन बजावा	91
183.	चिमटी रै गइ फसकें	92
184.	एक पुरा में रै कें	92
185.	मुलक दिनन तक जोनें	93
186.	तन करवे सतरंगा	93

Scanned with CamScanner

ओंछें बार : इतै

क्र.	क्षणिका	पृ.क्र.
187.	लगतीं हट्टी कट्टी	94
188.	कैसें उनसें बोलें	94
189.	कइ कइ बेर सपर रइ	95
190.	बिगरत नइ मनसूबौ	95
191.	मन काये तें भूला	96
192.	जा सौतन नारी की	96
193.	कौआ सें बतरातीं	97
194.	बनती ठकुर सुहाती	97
195.	अपने गोरेपन पै	98
196.	प्रभु से डर कें कपनें	98
197.	अपने बंधे बखत पै	99
198.	चिकने गाल करानें	99
199.	हमकों देख रिसा रइ	100
200.	आँखे नैयां जाकें	100
201.	कर बैठे नादानी	101
202.	फिर रइ ऐठी ऐंठी	101
203.	दूजौ और न सूजत	102
204.	जानें काय डरा रइ	102
205.	कुतरे धरे सुआ से	103
206.	देखी एक हसीना	103
207.	बारन खों लटका कें	104
208.	खड़री खटिया द्वारें	104
209.	संग संग जावे के	105
210.	लौट समय घर आनें	105
211.	लग रए सबकों मुन्ना	106
212.	जानें दइ आजादी	106
213.	अपने प्रान बचा रए	107
214.	उघरे देख बखन पै	107
215.	फिर रए मारे मारे	108
216.	लग गइ उनखों रोटीं	108
217.	बीतीं कइ दिन रातें	109
218.	बैठीं अकुलानी सी	109
219.	का प्रभु माया तोरी	110
220.	सिर के ऊपर कढ़ गव	
221.	संग नादिया बारे	
222.	लुट गव है ददखानो	
223.	होवै ठंडक वारौ	
224.	मन जौ तुम खों आतइ	
225.	बजन लगीं घंटरियाँ	
226.	विधि की सबरी माया	
227.	नेंकउ मौ ना फेरें	
228.	हम दो हैं वे ढ़ाई	
229.	सोचो तौ तुम थोरो	
230.	तन कौ का जौ कर रइ	
231.	दुनियाँ नें जौ जानी	
232.	उनखों खूबइ आतइ	
233.	पिजरा सें कड़वे खों	
234.	लऐं किताबें पढ़तीं	
235.	दांतन जीभ कतर रए	
236.	अबइ चलीं गइ गोरी	
237.	अबइ हार खों परवत	
238.	उमर हो गइ पचपन	
239.	लग रव ऐंचकतानो	
240.	राधा पूरी परिया	
241.	सोगइ आँखे मीचें	
242.	काउ काम न आनें	
243.	काए चढ़ी बेशरमी	
244.	की नें इनें बिसारें	
245.	रई घैलिया रीती	
246.	चुटियां दो लटका कें	
247.	हंस हंस कें बतरा रइ	
248.	जैसे हमरे सैयाँ	
249.	नइ अकेले सोनें	
250.	देखी सुनी न ऐसी	
251.	ऊलत दिखै जवानी	
252.	नइ काऊ सें डर रइ	

Scanned with CamScanner

01 जनवरी, 1957 को दतिया (मध्यप्रदेश) में जन्मे डॉ.राज गोस्वामी ने जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर से विधि स्नातक तथा समाजशास्त्र, हिन्दी साहित्य में स्नातकोत्तर एवं विक्रम शिला हिन्दी विद्यापीठ ईशीपुर, भागलपुर, बिहार से विद्यावाचस्पति (पी.एच.डी.) विद्यासागर (डी.लिट्) की उपाधि प्राप्त की। भारतीय पुलिस सेवा के वरिष्ठ अधिकारी डॉ.बी.मरिया कुमार की तेलगु एवं अंग्रेजी कविताओं की नवीनतम् अनुवाद पुस्तक ''छिपकली'' पाठकों के समक्ष आ चुकी हैं। डॉ. राज गोस्वामी के प्रकाशित ग्रन्थों में ओ मेरे मन, जटायु, अनुबंधों के छंद, मम्मी की मिट्ठी, मेरी कविता यात्रा, तर्क से परे, वो वीनस और मैं, ढोंगी पण्डित, गीता हाइकू, कुम्भकर्ण हो गई चेतना और अब बुन्देली चौकड़ियों की अनुपम कृति ''ओंछें बार ककइ सें' प्रकाश में आई है। उनकी काव्य कृतियों को श्रीलाल जैन पुरस्कार तथा शान्ति साधना सम्मान दिया जा चुका है। गुजरात के राज्यपाल माननीय श्री सुन्दरसिंह भण्डारी तथा उ.प्र. के राज्यपाल श्री विष्णुकान्त शास्त्री एवं अरुणांचल प्रदेश के राज्यपाल श्री माताप्रसाद के कर कमलों से सम्मानित हो चुके हैं। शिक्षाविद् कुलपति डॉ. श्री कलियान सिंह, प्रो. डी.पी. सिंह, डॉ. राधारमण दास, प्रो. ए.डी.एन. वाजपेयी जैसे मनीषियों ने डॉ. राज की चौकड़ियों को सराहा है। डॉ. गोस्वामी की यह ग्यारहवीं कृति ''ओंछें बार ककइ सें'' लोक साहित्य की बुन्देली चौकड़ियों में लिखी अनुपम पुस्तक है। उनकी कवितायें ही उनका परिचय हैं। वे साहित्य सेवा के साथ म.प्र. के जल संसाधन विभाग में सन् 1978 से शासकीय सेवक भी हैं। इस कृति के प्रकाशन पर मेरा उन्हें साधुवाद।

-अरूण श्रीवास्तव ''मुन्नाजी''

Scanned with CamScanner